Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-3, December-2019
Impact Factor:4.081
www.researchguru.net

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और जनवाद

हेमांगनीबहन किरणभाई चौधरी

पीएच.डी.शोधार्थी, हिन्दीभवन सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट,

E-mail.hkchaudhari14@gmail.com Mo.8758100295

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी नाट्य साहित्य आज विकास के शिखर पर स्थापित हो चुका है । भारतीय साहित्य में हिन्दी नाट्य साहित्य की एक अलग पहचान है । किसी भी नाटककार का नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत होता है, तब वह मनुष्य के दिलो-दिमाग पर छा जाता है । क्योंकि वहाँ श्राव्य और दृश्य कला मिश्रित होती है । सर्वेश्वरजी एक सफल नाटककार है । उनके 'बकरी' नाटक के तीन सौ से अधिक प्रदर्शत हो चुके है । सबसे ज्यादा प्रदर्शन 'ईप्टा बबई' ने एम.एस. सत्यु के निर्देशन में किए बकरी नाटक देश की सभी प्रादेशिक भाषाओं में खेला गया है । सर्वेश्वर जी हिन्दी के जनवादी नाटक परम्परा के विशिष्ट व्यक्ति है । उनकी नाट्यरचना जनवादी चेतना का प्रसार करके नई चेतना का संस्कार होता है । आधुनिक भारतीय ग्रामीणों और नगरों में रहनेवाला मध्यवर्ग तथा उनकी तथाकथित स्थिति ही उनके नाट्यवस्तु के केन्द्र में है।

जनवाद का अर्थ

प्रजातंत्र, लोकतंत्र, जनतंत्र एवं गणतंत्र को ही जनवाद कहा जाता है । जनवाद शब्द अंग्रेजी के डेमोक्रेसी शब्द का हिन्दी रुपांतर है । मूल डेमोक्रेसी शब्द ग्रीक भाषा के डेनोस (DENOS) और क्रेटिन (KRATIEN) नामक दो शब्दों को मिलकर बना है । अर्थात् डेमोक्रसी याने जनता का शासन । डेमोक्रेसी में शासन का एकमात्र लक्ष्य होता है जनता का विकास एवं प्रगति करना । जन अर्थात् लोक, जनता, प्रजा, मनुष्य का समूह । भारतीय इतिहास में शब्द का प्रयोग काफी प्राचीन काल से होता आ रहा है । "जनवाद कला साहित्य और जीवन के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण है ।"[1] यानी की हिंदी रचनाओं में आनेवाला जनवाद मार्क्सवादी विचारधारा से आया है । "ऐसी चिंतनधारा में विकसित होनेवाले साहित्य को सर्वहारा साहित्य प्रगतिशील साहित्य, जनवादी साहित्य का नाम दिया है ।"[2] प्राचीन काल में देखे तो जनवादी दृष्टि या जनतांत्रिक विचारधारा का उल्लेख मिलता है। जिसमें मौर्यकालीन अनेक गणतंत्रो या गणराज्यों की व्यवस्था लोकहित को ध्यान में रखकर चलायी जाती थी । राजा भले ही अधिकारों का उपयोग करता हो किन्तु जनता पर किसी भी प्रकार का अन्याय नही होता था । भारत में जनवाद या जनतंत्र की स्थापना 15 अगस्त 1947 को हुई । जिसमें जनप्रतिनिधियों के संगठन को समग्र जनता चुनकर देती है । डॉ. ईद्रबहादुर सिंह "इसे एक जनवादी आंदोलन के रुप में स्वीकार कर उसे यहाँ के समाज एवं समय की वास्तविकताओं से उपजा आंदोलन मानते है । जनवादी आंदोलन अपने देश की मिट्टी अपने समय और समाज की वास्तविकतओं से उपजा आंदोलन है, इतिहास की एक ऐसी जरुरत हैं जिसकी उपेक्षा करके साहित्य तथा संस्कृति को देश की अधिसंख्य जनता की आकांक्षाओं के ही अधिसंख्य जनता की आकांक्षाओं के अनुरुप नया मोड़ नहीं दिया जा सकता है ।"[3]

कुछ विद्वान ऐसे भी है जो जनवाद को किसी खेमें में न रखकर उसे स्वतंत्र विचारधारा मानते है । वह मानते हैं कि तात्विक साम्यता की दृष्टि से मार्क्सवाद, प्रगतिवाद तथा जनवाद में पर्याप्त साम्यता है । किंतु अनेक लेखक किसी विचारधारा से न जुडते हुए स्वयं को विशुद्ध जनवादी या स्वतंत्र खेमा विरोधी लेखक मानते हैं । जिस प्रकार जनवाद शोषण का विरोध और आम नागरिकों के हितों पर बल देता है, ठीक उसी प्रकार मार्क्सवादी विचारधारा भी मजदूर वगर एवं श्रमजीवी वगर के हितों की रक्षा की बात करती है । वर्तमान समय में जनवाद का स्वरुप काफी व्यापक बना हुआ है । किन्तु सच्चे अर्थो में जनवादी जनतंत्र की स्थापना नही हुई है क्योंकि इस वर्तमान समय में पूंजीपति कंपनी मालिक और बचे जमींदार लोग अपने स्वार्थ को पूर्ण कर रहे है ।

1. जनवाद की प्रस्तुति

सक्सेनाजी के नाट्य साहित्य पढने के बाद यह स्पष्ट रुप से कह सकते है कि नाटककार ने अपने नाटकों की रचना सामान्य जनता को लेकर किये है । नाटकों में आम आदमी के दुःख, दर्द पीडा को प्रस्तुत किया है । सक्सेनाजी का बकरी नाटक राजनीतिक व्यंग्य नाटक है । उन्होंने समकालीन परिस्थिति के समस्याओं के साथ साथ जनशक्ति को भी उजागर किया है । 'बकरी' नाटक आम आदमी के लिए बना है । बकरी हिन्दी के सफलतम राजनीतिक नाटकों में से एक है । जिसमें अपनी स्वार्थपूर्ति करनेवालो नेताओं की असली पोल खोलने का प्रयास किया गया है । दूसरा नाटक 'लडाई' में भी मुख्य पात्र सत्यव्रत सत्य की लडाई अकेला लड़ता है । नाटक में कैसे लोग थोड़े रुपयों की लालच में इमान बेच देते है । राशनकार्ड पर दो-चार नाम ज्यादा डलवा देते है और उन पर मिलनेवाली वस्तुओं को ब्लेक में बेचते है । रोटी सडी हुई बिक रही है । चारों और पैसे कमाने की होड़ लगी हुई है । भिखारियों के भी संघ बने हुए है । ऐसे में व्यक्ति करे तो क्या करे ? मध्यमवर्गीय सत्यव्रत ईमानदारी पूर्वक जीने की बात करता है । उसे सब जगह झूठ, फरेब, बेईमानी, धोखाघडी, साम्प्रदायिक दंगे, जातिवाद, कालाबाजारी, भ्रष्टचार देखने को मिलता है । इन सबकी उसे चिढ है । भूमिका में ही देख सकते है कि "बत्तीस साल..आजादी के बत्तीस साल, लडाई, जहालत से लडाई, गन्दगी, बदनीपती, बेईमानी से लडाई, लडाई खत्म नहीं हुई जारी है । गरीब से लडाई, मानसिकता, गुलामी से लडाई, औपनिवेशिक संस्कार से लडाई, सामन्ती स्वभाव से लडाई... लडाई खत्म नही हुई जारी है । और इस लडाई में हर आदमी अकेला, आस्था और विश्वास से टूटा हुआ । झूठ के विराट रेगिस्तान में अकेला, अकेला...अकेला... । 'सत्य ही ईश्वर है महात्मा गांधीने कहा था, लेकिन कहाँ है सत्य ? कहाँ है ईश्वर ?"[4] नायक सत्यव्रत जिस प्रकार से न तो कोई गलत कार्य करता है और न दूसरों को करने देता है । एक-एक करके वह प्रिन्सिपल, बस, सडक आश्रम सब जगह जाता है, सब जगह लड़ पड़ता है चाय, डबल रोटी, चीनी, खाना, मंजन करना कुछ भी उसे अच्छा नहीं लगता । क्योंकि उसकी दृष्टि से ये सारी चीजे झूठ, बेईमानी से पैदा हुई है । सत्यव्रत की सत्य के लिए लडाई जारी है। वो सभी चीजों का विरोध करता है । उसका साथ कोई नही देता । गायक कहता है कि

"मार पुलिस की तन पर खाई

मन पर पडी सडक की मार,

जहाँ गरीब बदमाशो का

चलता है विचित्र व्यापार

चोरी, ठगी, भूख, आवारागर्दी

सबके हुए शिकार

चारों तरफ उपेक्षा पाई

चारों तरफ मिली दुत्कार ।"[5]

इस प्रकार सत्य से लड़ते-लड़ते सत्यव्रत अधमरा हो जाता है फिर भी वो लडाई लड़ता रहता है । 'अब गरीबी हटाओं' नाटक जन-समुदाय से जुडा हुआ । एक ऐसा नाटक है जिसमें चुनाव के समय नेताओं द्वारा किए गए झूठे वादों में गरीब हटाओं का नारा एक जूठ बनकर रह जाता है । सब लोग शोषण का भाग बनते है पर उनका विरोध करने की किसी में हिम्मत नहीं है ।

(2) जनसमुदाय के विरुद्ध राजनीति

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के सभी नाटकों में सदियों से दलित, उपेक्षित और कुचली जा रही जनता के दुःख दर्द को प्रस्तुत किया है । नाटकों की इस अभिव्यक्ति से हमारे सामने ऐसी सच्चाई आती है जिसके बारे में हम सोच भी नहीं सकते । अब गरीबी हटाओं जन समर्थन का नाटक है । उस जन का जो सदियों से आज तक अपमान और शोषण का शिकार बनती आई है । उच्चवर्ग के लोग गरीबी नही हटाना चाहते बल्के गरीबों को ही हटा देना चाहते है । अंत में नट सभी को एकजूट होकर परिस्थिति का सामना करने के लिए कहता है । "दर्शकगण ! यह झूठी धमकी नहीं है। हम तो नाटक खेलने और बंध होने को तैयार है, यदि आप हमारा साथ है । पर आप साथ नही दे सकेंगे, आपकी लाचारी है । बाल-बच्चोंवाले आदमी हैं । ज्यादा सोचते-समझते है । यह नाटक आगे तभी हो सकता है जब आप में इतनी ताकत आ जाए कि आप-हम मिलकर इनकी ताकत का मुकाबला कर सकें, नाटक आगे चलवा सकें । तब तक के लिए हम इतने से ही अपना कर्तव्य पूरा करेंगे ।"[6] इस तरह नट जनता को जाग्रत करता हो । 'बकरी' नाटक में भी हम देख सकते है कि कैसे नेतागण गांधी के आदर्शो के साथ जनता का शोषण करते है ।

(3) आर्थिक शोषण

आजादी के बाद देश में लोग की मानसिकता बदल चुकी है । आज धन कमाना एकमात्र हेतु बन गया है । 'बकरी' अब गरीबी हटाओ, लडाई, नाटको के माध्यम से हमें पता चलता है की मनुष्य धन कमाने के लिए क्या कुछ नही करते । गलत तरीकों को भी अपनाने में शर्म महसूस नही होती । बकरी नाटक में दुर्जनसिंह, कर्मवीर, सत्यवीर, पैसा कमाने के लिए गांधीजी के नाम पर पैसा एकत्र करते है । गरीब विपती की बकरी चुराकर उसे गांधीजी की बकरी बना देते है । नट कहता है कि, "हर ऐश करा जाएगा यह गांधी की बकरी हर खाता भरा जाएगा यह गाँधी की बकरी । हर सच को हरा जाएगा यह गाँधी की बकरी। वैतरणी तरा जाएगा यह गांधी की बकरी । बकरी की इसलिए सभी जय बोल कर चलो । जो चाहो करो सिसको न दिल खोल कर चलो । दुर्जन के साथ सबका यहाँ माल कर चलो । हो टेंट या तिजोरी सब टटोल कर चलो । हर राह साफ करती है यह गांधी जी बकरी ।"[7]

इस तरह बकरी के नाम पे लोग धन बटोरते है और 'बकरी शांति प्रतिष्ठान, बकरी संस्थान, 'बकरी सेवा संघ, 'बकरी मंडल, जैसी संस्थाओं की स्थापना करते है । 'लडाई' नामक में भी यही बताया गया है की हर जगह पर पैसे कमाने के लिए गलत तरीके अपनाये गये है । इन सबका सत्यव्रत विरोध करता है । उनकी बीवी-बच्चे भी उनको साथ नही देते । रोटीवाला सड़ी रोटी बेचकर पैसा कमाता है । विज्ञापन क्षेत्र के लोग झूठा विज्ञापन देकर पैसे कमाते है । बस कंडक्टर पैसा लेकर टिकट नही देता है । राशनकार्ड में दो चार ज्यादा नाम डलवाकर उन पर मिलनेवाली वस्तु ब्लेक में बेचकर पैसा कमाते है। लोग ने भीख मांगने को भी धंधा बना दिया है । धार्मिक पुरोहित भी भजन किर्तन के पैसे लेते है ।

सत्यव्रत : "शान्ति के नाम पर इस गरीब देश में इतने रुपयों की बर्बादी । साठ लाख रुपए खर्च करेंगे । स्वामी महेश्वरानंद कहाँ रहते है ?"[8] इस तरह धन का दुरुपयोग से सत्यव्रत परेशान और चिंतित हो जाता है । अंत में सत्यव्रत की मृत्यु हो जाती है । "अब गरीबी हटाओ' नाटक में दो स्थितियों को बताया गया है । एक राजशासन और लोकशासन । मुख्यमंत्री जनता को संबोधन करते हुए कहते है कि "गरीबन का पुरवा' के प्यारे भाइयों और बहनों । हरिजन हरि का जन होता है जैसे हरि का स्मरण हम हर वक्त करते है वैसे आप हरिजनों का । आप हमारे हरि है हमें सरपंचजी ने बताया, जहां पीने के पानी की कमी हैं । कुआँ नहीं है । हमने कृषिमंत्री से कहा है कि यह इसकी व्यवस्था करें । आपकी गरीबी हमसे छूपी नही । हमारा देश गरीब है, गरीब हटाना हमारा पहला

काम है, हमारी प्राथमिकता है । हम सबको मिलकर गरीबी हटानी चाहिए ।" इस तरह अच्छी बातों से लोगों को बेवकूफ बनाया जाता है ।

(4) जनवादी चेतना

भ्रष्ट राजनीतिक के प्रति जाग्रत जनचेतना को साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत किया है । सक्सेनाजी का 'बकरी' नाटक प्रगतिशील जनवादी चेतना युक्त है । सत्ता पर बैठे लोगों ने गांधीजी की बकरी का सहारा लेकर आम जनता को लूटा है । इन सब का पता चलने पर जनता ने उसका उग्र विरोध भी किया है ।

युवक "जनता से समझाते हुए कहता है ।

"युवक किसका मुर्दा फूँककर बैठे हो ?

ग्रामीण : विपती को जेहल ले गए ।

दूसरा : बकरियों छीन लीन्ही, जेहलो भेज हीन्ही ।

युवक : और आप आशीर्वाद लीन्ही । आपने उन्हें बकरी क्यों दी ?

तीसरा : कहिन गांधी बाबा की हैं तो हम काव करित ?

युवक : उन्होंने कहा और आपने मान लिया ।"[9]

ग्रामीण जनता युवक पर भरोसा नही करते और नेता की कही बातों पर भरोसा करते है । युवक चुनाव में भी विरोध करता है । उन सब को वोट देने से मना करता है । "यही कि वोट चुनाव सब मजाक हो गया है । सब झूठ पर चल रहा है । गरीबों की बकरी पकड़कर उनसे पहले पैसा दुहा । अब वोट दुह रहे है, फिर पद और कुर्सी दुहेगा ।"[10] चुनाव का विरोध करने पर युवक को जेल में डाल दिया जाता है । चुनाव जितने पर युवक और विपती को जेल से छोड दिया जाता है । जीत की खुशी में निकाले गये जुलूस के अवसर पर ये दोनों पहुंच जाते है । और गांव-वालों को सच्ची बातों से अवगत कराते है । सभी गांववाले मिलकर नेता को रस्सी से बांध लेते है । इस तरह अंत में जाग्रत नवयुवक की सूझ-बूझ से लूटेरे नेताओं का पर्दाफाश हो जाता है ।

उपसंहार

अपने नाटकों के माध्यम से सर्वेश्वरजी ने आम आदमी, गरीब, मध्यमवर्ग परिवारों की समस्याओं, जीवन संघर्ष, पुलिसो, अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सजीव चित्रण किया है । उन्होंने देश की हालत तथा जनता के शोषकों, उत्पीड़को की और ध्यान आकृष्ट कराने का प्रयास किया है । सभी नाटकों में जनवादी सूर को देख सकते है । सर्वेश्वर के नाटक आम जनता के संघर्षो से बीच होकर गुजरे है । उनकी छोटी-छोटी समस्याओं से अवगत कराया है ।

संदर्भग्रंथ

1. नागार्जुन की कविता में जनवादी चेतना, पृ.59
2. वही, पृ.59
3. जनवादी कवि धूमिल, पृ.12
4. लडाई, पृ.8
5. वही, पृ.34
6. अब गरीब हटाओ, पृ.48
7. बकरी, पृ.39
8. अब गरीब हटाओं, पृ.19
9. बकरी, पृ.43
10. वहीं, पृ. 43